प्रकाशनार्थ

कार्ल मार्क्स पर सम्मेलन - दिन-4

पटना, 19 जून। वैश्वीकरण के इस दौर में पूंजीवादी उत्पादन के वनों के विनाश, वैश्विक तापन, नाइट्रोजन चक्र में व्यवधान और प्रजातियों का अस्तित्व संकटग्रस्त होने जैसे विनाशकारी पक्ष ने आज पारिस्थितिकी को मार्क्सवाद के केंद्रीय क्षेत्रों में से एक बना दिया है। यह बात आज मंगलवार को आद्री द्वारा कार्ल मार्क्स पर आयोजित पांच-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के चौथे दिन जापान के ओसाका राजकीय विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर कोहेई साइतो ने कही। वह 'मार्क्स और एंजेल्स : पारिस्थितिकी के दृष्टिकोण से बौद्धिक संबंधों पर पुनर्विचार' विषय पर आयोजित ज्योर्जी लुकाक्स स्मारक व्याख्यान दे रही थीं।

प्रो. साइतो ने कहा कि मार्क्स और एंजेल्स के बीच 'बौद्धिक संबंध' की कम स्पष्ट अवधारणा के कारण पश्चिमी मार्क्सवादियों ने पारिस्थिकी की मार्क्सवादी आलोचना कभी भी विकसित नहीं की। पश्चिमी मार्क्सवादियों की नजर में प्राकृतिक विज्ञान एंजेल्स की निपुणता का क्षेत्र था।

प्रो. साइतो के अनुसार, मार्क्स 'सामाजिक चयापचय' अर्थात उत्पादन, परिभ्रमण और खपत तथा प्राकृतिक जगत के बीच परस्पर निर्भरता में गंभीर वैश्विक व्यवधान के खतरे के प्रति काफी अधिक सचेत थे।

चूंकि पूंजीवादी उत्पादन सामाजिक और प्राकृतिक चयापचय (मेटाबॉलिज्म) के जटिल आयामों का पूरी तरह ध्यान नहीं रख सकता है इसलिए यह प्रकृति को बर्बाद कर देता है, मानव और प्रकृति के सहविकास की संभावनाओं को समाप्त कर देता है और यहां तक कि मानव सभ्यता को भी संकट में डाल देता है। पूंजी जिस चीज पर ध्यान देती है वह यही है कि किसी भी तरह संचय किया जाय। इसीलिए धरती का अधिकांश हिस्सा अगर मानवों और पशुओं के जीवित रहने के लिहाज से अनुपयुक्त भी क्यों नहीं हो जाय, यह उसके लिए कोई मायने नहीं रखता है। लिहाजा पूंजीवाद के ध्वंस के इंतजार करने के बजाय प्रकृति द्वारा बदला लेने के कारण यह अपरिहार्य हो गया है कि वैश्विक पारिस्थितिकी के संकट से लड़ रहे लोग अपने पर्यावरण के साथ चयापचय (मेटाबॉलिज्म) पर सचेत और सक्रिय नियंत्रण हासिल करें।

पाब्लो नेरुदा स्मारक व्याख्यान देते हुए इटली के इंटरनेशनल चे गुवेरा फाउंडेशन के अध्यक्ष रॉबर्टो मसारी ने कहा कि चे गुवेरा पर सत्ता का नशा कभी नहीं चढ़ा। मसारी ने चे की औषधि से साम्यवाद की यात्रा का उल्लेख

किया और महसूस किया कि लैटिन अमेरिकी लोगों की समस्याओं का समाधान क्रांति के जरिए ही किया जा सकता है। क्यूबा सरकार के उद्योग मंत्री के रूप में वह कारखानों में जाते थे और श्रमिकों की समस्याओं को समझने के लिए वह उनके साथ रहते थे।

क्रांतिकारिता के विशेषज्ञ प्रो. मसारी ने कहा कि चे सोवियत संघ की नई आर्थिक नीति के कठोर आलोचक थे और इस विषय पर उनकी पुस्तक को 2006 तक गुप्त रखा गया। चे गुवेरा ने कहा था कि अपने खिलाफ बोलने वालों के विरुद्ध वह हिंसा की वकालत नहीं कर सकते हैं। उनके व्याख्यान का शीर्षक 'चे गुवेरा और मार्क्स' था।

आज के दिन के अन्य मुख्य वक्ताओं में ज्योर्जी प्लेखानोव स्मारक व्याख्यान देने वाली मैक्सिको के यूनाम की प्रोफेसर एल्विरा कोंचीरो भी शामिल थीं जिनके व्याख्यान का शीर्षक था – 'बेकब्जा होने पर टिप्पणियां : हमलोगों ने मार्क्स को कैसे पढ़ा है'।

बर्लिन के रोजा लक्जेमलर्ग फाउंडेशन की वरिष्ठ अध्येता मिखाइल ब्री ने 'व्यवहारिक प्रयोजनों के लिए भविष्योन्मुखी विज्ञान के बतौर मार्क्स की पूंजी' विषयक माइकल काल्की स्मारक व्याख्यान दिया।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के समसामयिक दक्षिण एशियाई अध्ययन कार्यक्रम के एसोसिएट शापान अदनान ने लियोन ट्रॉट्स्की स्मारक व्याख्यान दिया जिसका शीर्षक 'मार्क्स के प्राक् पूंजीवादी संचय संबंधी नवाचारी विचार और उसकी समसामयिक प्रासंगिकता' था।

अमेरिका के कोलोरेडो राजकीय विश्वविद्यालय की एसोएिसट प्रोफेसर रमा वासुदेवन द्वारा हेनरी लेफेव्र स्मारक व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान का शीर्षक 'मार्क्स, मुद्रा और पूंजीवाद' था।

आज के दिन पांच आलेख भी प्रस्तुत किए गए। आलेखों के प्रस्तोता पाओला रौहाला, हेलेन फ्लूरी, मरियम एस्लेनी, कुमारी सुनीता वी. और अलेस्सांद्रा मेज्जाद्री थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org